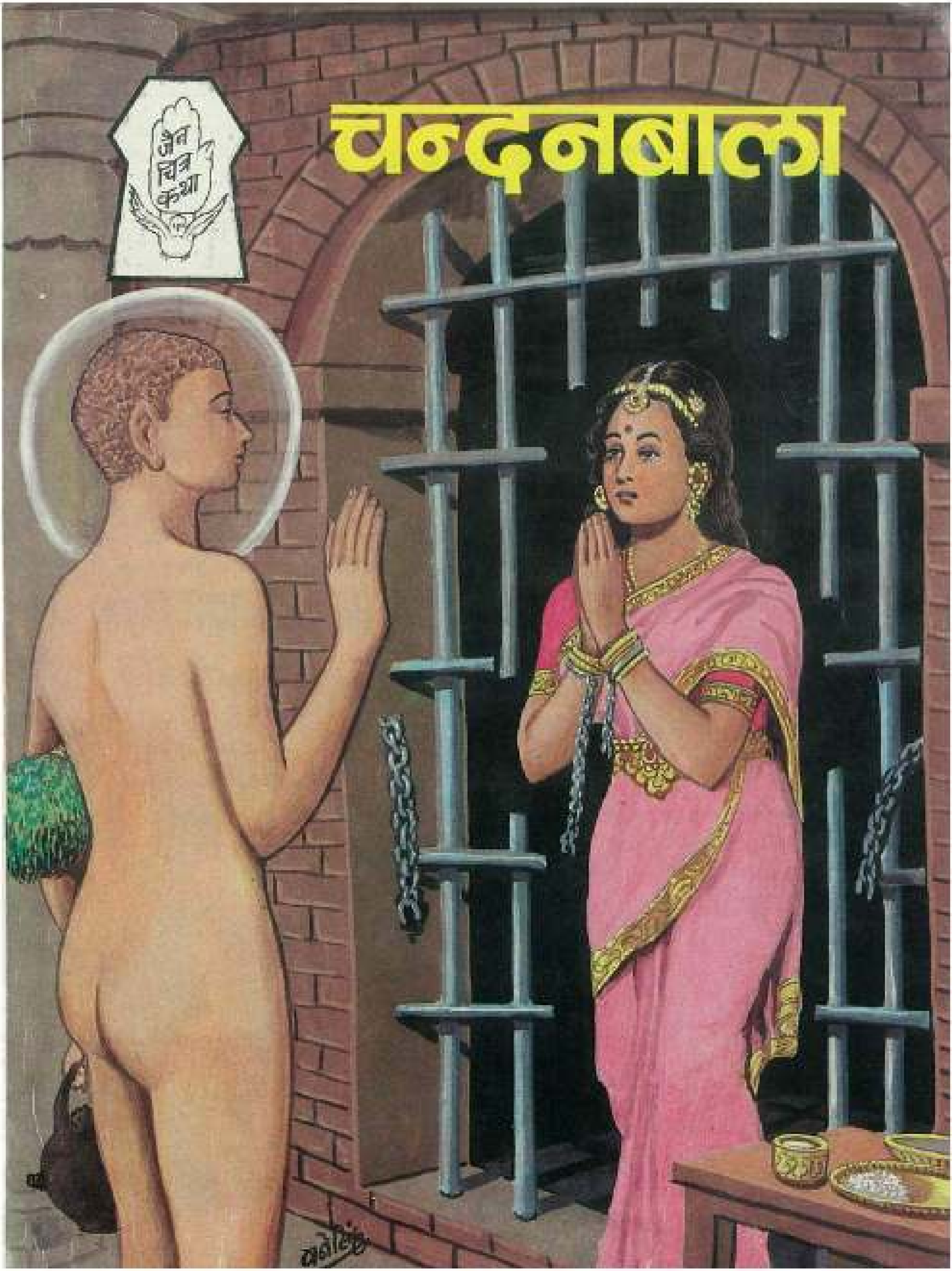
जैन चित्र कथा
चन्दनबाला

चन्दन बाला

सम्पादकीय

यों तो सुन्दरता के सभी प्रेमी हैं वह चाहे जड़-चेतन, नर-नारी में पर इतिहास साक्षी है नारी की सुन्दरता, आदमी को आदमी नहीं रहने देती इसमें दोष सुन्दरता का नहीं, दोष आदमी की उस कमजोरी का है जो नारी की सुन्दरता को वासना के रूप में उभारती है। प्रस्तुत कृति का कथानक सुन्दरता की सज्जा का एक नमूना है जिसे चन्दन बाला की सम्यक दृढ़ता में सुन्दरता की इस सज्जा को स्व स्वरूप में बदल दिया था। चम्पापुरी नगरी के राजा दधिवाहन जिनकी रानी धर्मधरणी जिसे अति सुन्दर होने के कारण कोशाम्बी नगर के राजा शतानीक का सेनापति कोफ-मुख स्वयंवर में न ले जाने के कारण दधि वाहन पर चढ़ाई कर रानी धर्मधरणी को छल-बल से वन में ले जाता है। पर वहां रानी मृत्यु को गले लगाकर इस धूर्त की कामना पूरी नहीं होने देती है। तब साथ में गई पुत्री चन्दन बाला को वह कोशाम्बी के बाजार में गणिका के हाथ बेचता है, फिर चन्दनबाला किसी तरह अपने सतीत्व की सुरक्षा करती है। पढ़िये इस परम पावन कृति में।

आचार्य धर्मश्रुत ग्रन्थमाला ऐसी ही जैन चित्र कथा का प्रकाशन करती है तथा आगे भी करती रहेगी।

धर्मचंद शास्त्री

प्रकाशक :– आचार्य धर्मश्रुत ग्रन्थमाला गोधा सदन अलसीसर हाउस संसार चंद रोड जयपुर

सम्पादक :– धर्मचंद शास्त्री

लेखक :– श्री मिश्रीलाल जी जैन एडवोकेट गुना

चित्रकार :– बनेसिंह

मुद्रक :– रैनानी ऑफसैट मूल्य 12/

फोन : 2282885, निवास 2272796

राजकुमारी चन्दनबाला महाराज चेटक की पुत्री थी। उसकी सुन्दरता की प्रसिद्धि दूर दूर तक फैली हुई थी।
चन्दनबाला
रेखांकन : बनेसिंह

उसे धर्म शास्त्र पढ़ते देखकर एक सहेली ने पूछा... ...
क्या पढ़ रही हो राजकुमारी जी ?
पिता श्री ने श्रमण वर्द्धमान महावीर के जीवन की घटनाएं लिखवाई हैं उन्हें ही पढ़ रही हूं।
एक सखी ने हंसते हुए कहा...
लगता है तू भी सन्यासनी बनेगी !
चल बाग में घूमेंगे, झूलेंगे, गीत गायेंगे।

सखियों के साथ राजोद्यान में बादलों को देखकर ... ...
देखो कैसे काले बादल छा गये ? लगता है पानी बहुत तेजी से बरसेगा । चलो लौट चलें ।
अरे ! कितनी सुन्दर युवती है ? ऐसी सुन्दरता तो मैंने जीवन में कभी नहीं देखी ! इसका हरण करना चाहिए !

विद्याधर का विमान आकाश से धरती पर उतरा, चन्दनबाला और उसकी सहेलियाँ भयभीत हो गयीं वह विमान से उतर कर चन्दनबाला को एकटक देखने लगा और ...

जल्दी भागो, कोई पापी मनुष्य प्रतीत होता है।

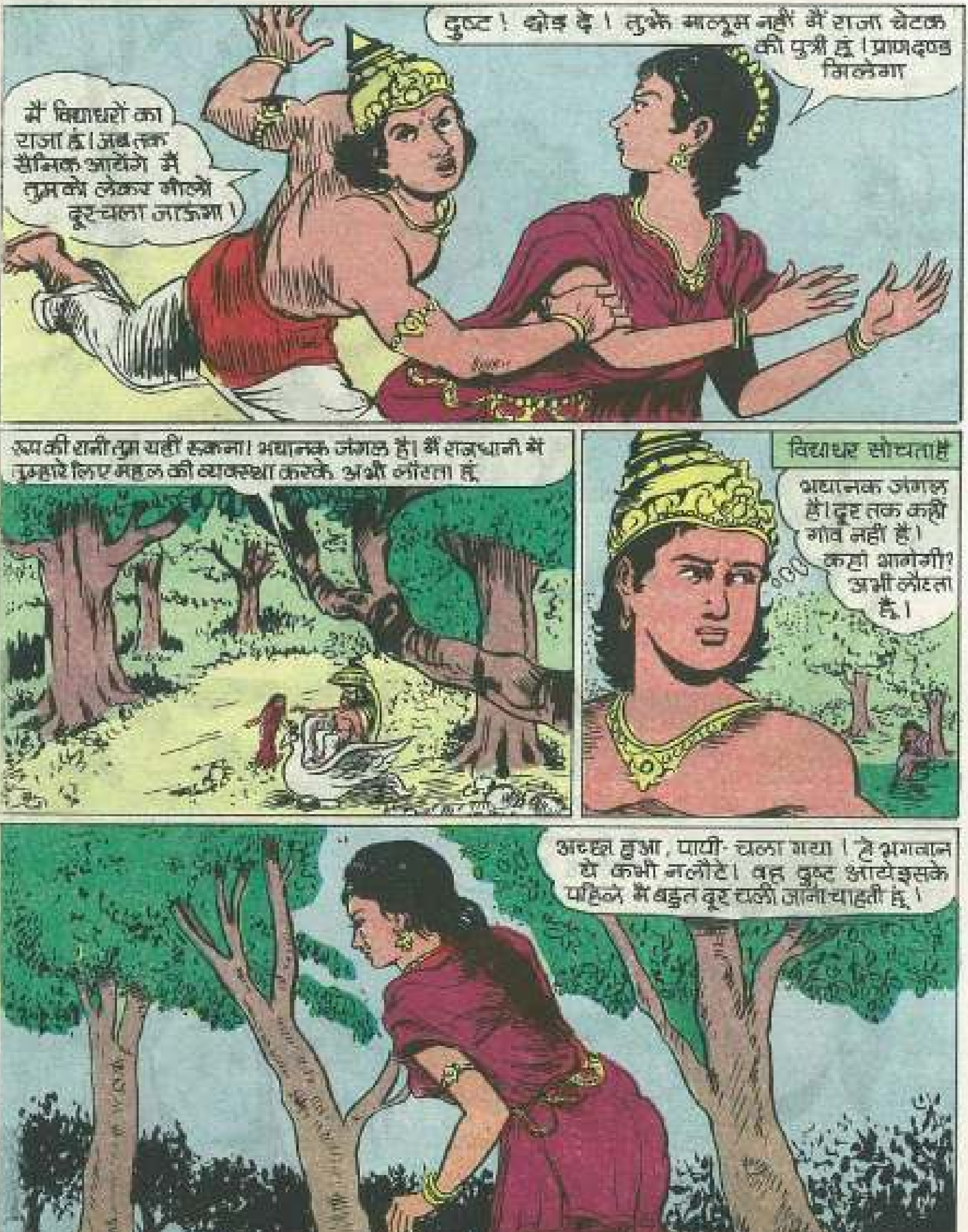
दुष्ट ! छोड़ दे । तुझे मालूम नहीं मैं राजा चेटक की पुत्री हूं । प्राणदण्ड मिलेगा
मैं विद्याधरों का राजा हूं । जब तक सैनिक आयेंगे मैं तुम को लेकर कोसों दूर चला जाऊंगा ।
रूप की रानी तुम यहीं रुकना । भयानक जंगल है । मैं राजधानी में तुम्हारे लिए महल की व्यवस्था करके अभी लौटता हूं
विद्याधर सोचता है
भयानक जंगल है । दूर तक कहीं गांव नहीं है । कहां भागेगी? अभी लौटता हूं ।
अच्छा हुआ , पापी चला गया ! हे भगवान वे कभी न लौटे । वह दुष्ट आये इसके पहिले मैं बहुत दूर चली जाना चाहती हूं ।

भूख, प्यास से बुरा हाल है, कोई नगर, ग्राम भी नहीं दिखता।
कुछ दूर चलने पर.... कोई शहर ... शायद कोई सहारा मिल जाये.
एक प्रौढ़ स्त्री को देख कर...
माँ यह कौन सा नगर है ?
बेटी ! तुझे नहीं मालूम यही कौशाम्बी है। बहुत सुन्दर नगर है।

माँ! मैं बहुत दुखी हूं! यहां धर्मशाला कहां है?
अरे! मेरे रहते मेरी बेटी धर्मशाला में रहेगी? चल बेटी! क्या सोच रही है? मैं तुझे बेटी की तरह रखूंगी!
माता के समान व्यवहार की आशा से वह उस महिला के साथ चल दी।
प्रौढ़ महिला उसे लेकर घर आई! प्यार-स्नेह पूर्वक भोजन कराया और..
बेटी। यह तेरे रहने का कमरा है। यहां सब सुविधाएं तुझे प्राप्त होंगी आराम से रह।
चन्दनबाला! मैं तुझसे अब कुछ छिपाना नहीं चाहती। मैं गणिका हूं! तुझे नाचना, गाना पड़ेगा। यदि मेरा कहना नहीं मानेगी तो रूप की हाट में बेच दूंगी।
माँ! मैं नीच काम नहीं करूंगी। चाहे मुझे प्राण भी गंवाने पड़े। नारी का चरित्र ही उसकी सुन्दरता है।
मेरी बात मान ले। धर्म और आदर्श की बातें रहने दे! अब तुझे कोई नहीं बचा सकता।
यह असम्भव है

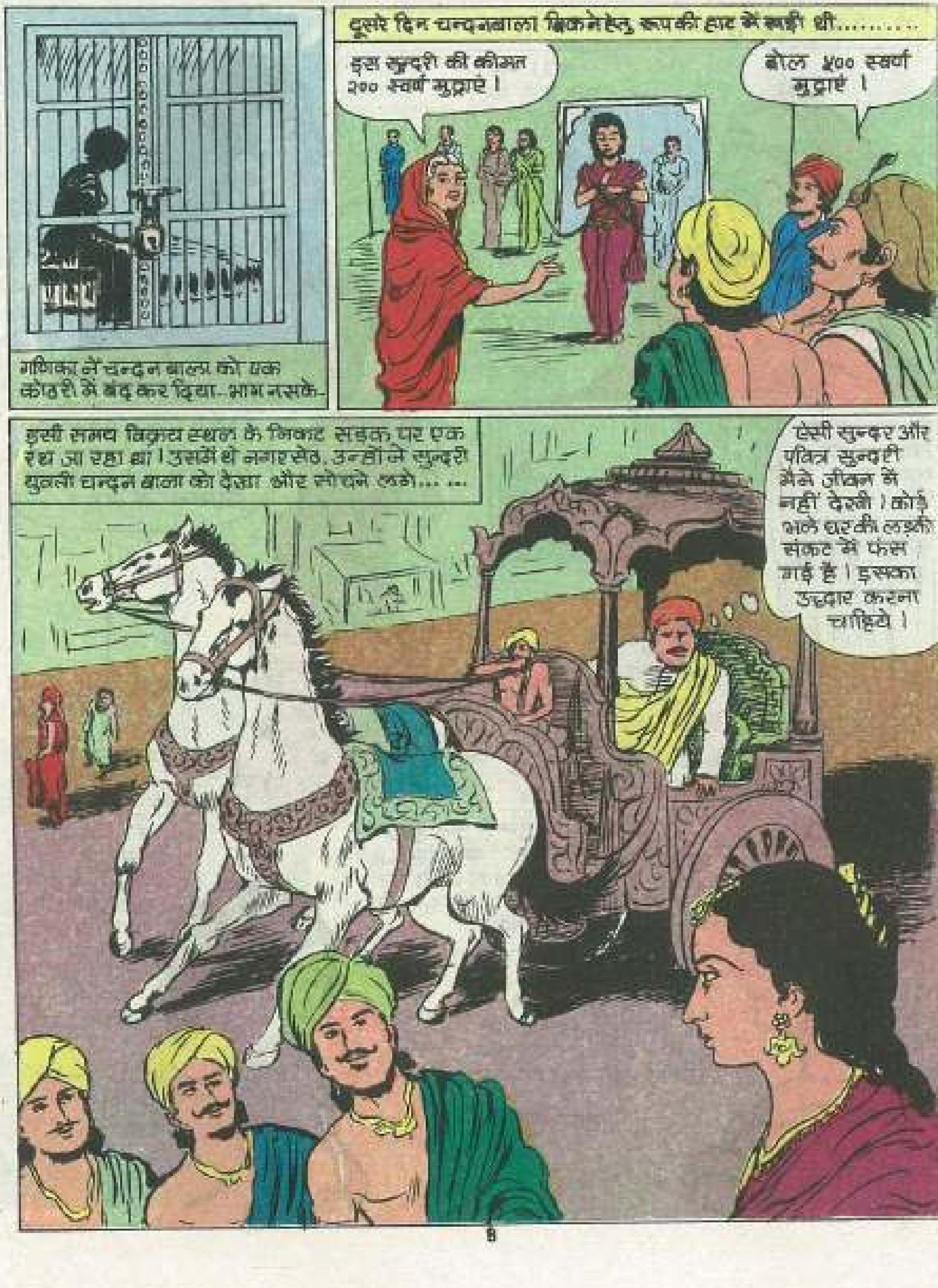
गणिका ने चन्दन बाला को एक कोठरी में बंद कर दिया- भाग नसके-
दूसरे दिन चन्दनबाला बिकने हेतु रूप की हाट में खड़ी थी.........
इस सुन्दरी की कीमत २०० स्वर्ण मुद्राएं !
बोल ५०० स्वर्ण मुद्राएं !
इसी समय विक्रय स्थल के निकट सड़क पर एक रथ जा रहा था। उसमें थे नगर सेठ. उन्होंने सुन्दरी दुबली चन्दन बाला को देखा और सोचने लगे... ...
ऐसी सुन्दर और पवित्र सुन्दरी मैंने जीवन में नहीं देखी। कोई भले घर की लड़की संकट में फंस गई है। इसका उद्धार करना चाहिये।

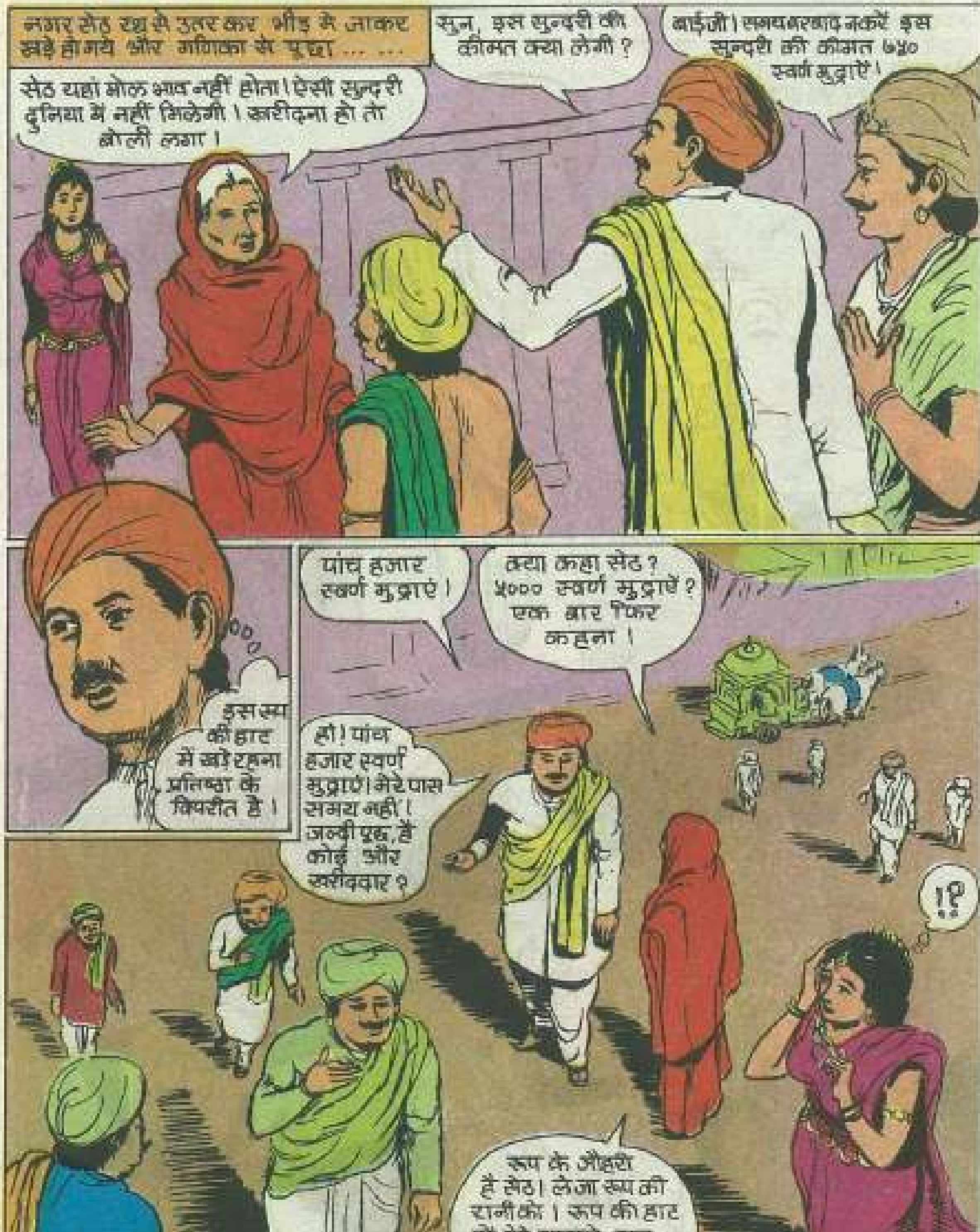

नगर सेठ रथ से उतर कर भीड़ में जाकर खड़े हो गये और गणिका से पूछा ... ...
सुन, इस सुन्दरी की कीमत क्या लेगी ?
बाईजी। समयबरबाद न करें इस सुन्दरी की कीमत ७५० स्वर्ण मुद्राएँ।
सेठ यहां मोल भाव नहीं होता। ऐसी सुन्दरी दुनिया में नहीं मिलेगी। खरीदना हो तो बोली लगा।
इस रूप की हाट में खड़े रहना प्रतिष्ठा के विपरीत है।
पांच हजार स्वर्ण मुद्राएं।
क्या कहा सेठ ? ५००० स्वर्ण मुद्रायें ? एक बार फिर कहना।
हां! पांच हजार स्वर्ण मुद्राएं। मेरे पास समय नहीं! जल्दी पूछ, है कोई और खरीदार ?
!?
रूप के जौहरी हैं सेठ। लेजा रूप की रानी को। रूप की हाट में तेरे सामने सब कंगाले हैं।

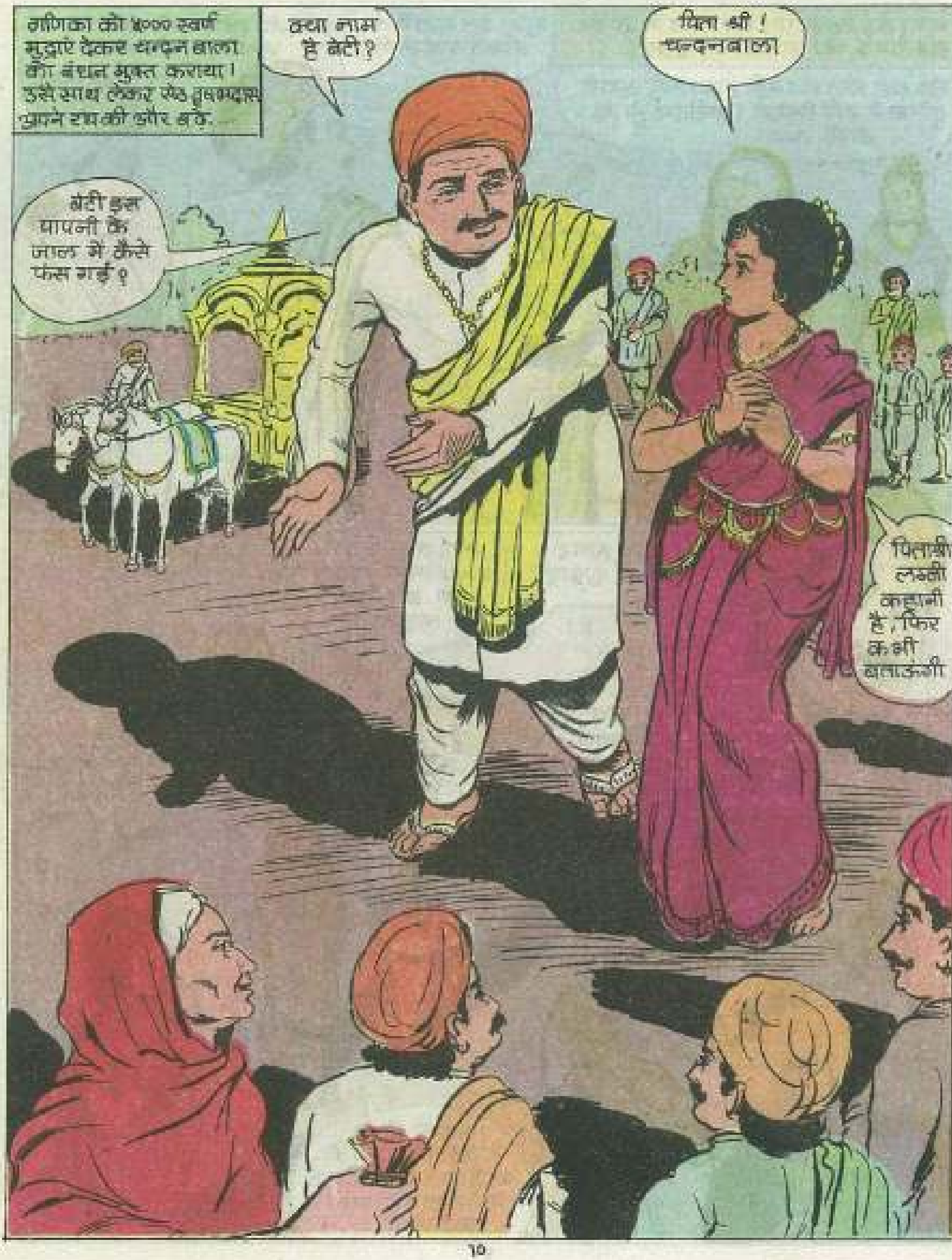
गणिका को ५००० स्वर्ण मुद्राएं देकर चन्दन बाला को बंधन मुक्त कराया। उसे साथ लेकर सेठ वृषभदास अपने रथ की ओर बढ़े.
क्या नाम है बेटी?
पिता श्री! चन्दनबाला
बेटी तुम पापनी के जाल में कैसे फंस गई?
पिताश्री लम्बी कहानी है, फिर कभी बताऊंगी

चन्दनबाला सोचती है...
इस भद्र पुरुष ने इतनी स्वर्ण मुद्राएँ देकर क्यों खरीदा है ?
बेटी! क्या सोच रही है? तेरे कष्ट समाप्त हो गये हैं!
सच पिता जी?
बेटी! मैं महात्मा महावीर का परम भक्त हूँ। वर्द्धमान महावीर आजकल संसार को सत्य। अहिंसा का उपदेश दे रहे हैं। भारतवर्ष इनके चरणों में नत है।
चन्दनबाला के नयनों में श्रमण महावीर का चित्र साकार हो उठा।
रथ महल के समान विशाल भवन के आगे रुका...

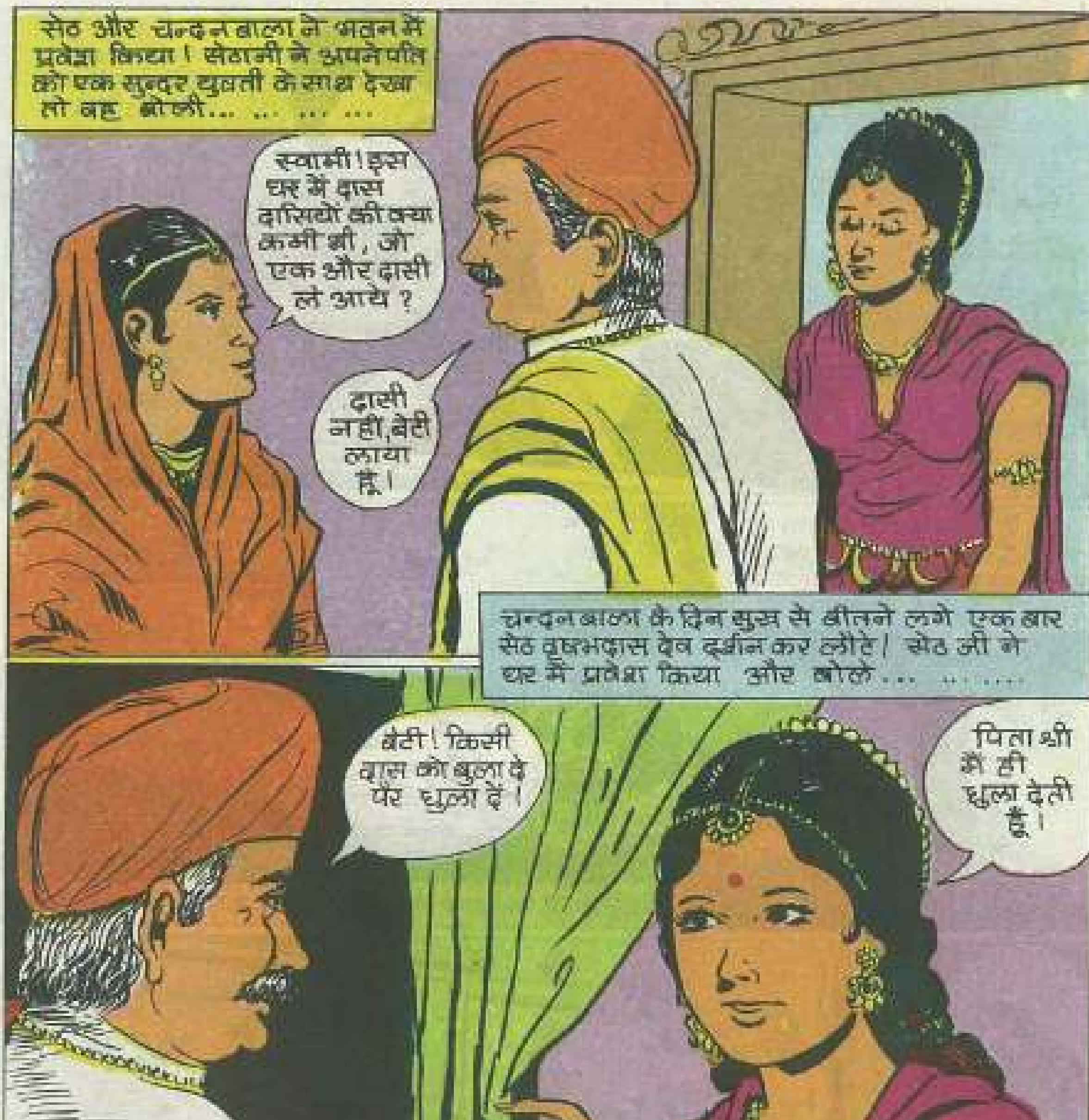

सेठ और चन्दनबाला ने भवन में प्रवेश किया। सेठानी ने अपने पति को एक सुन्दर युवती के साथ देखा तो वह बोली... ... ...
स्वामी! इस घर में दास दासियों की क्या कमी थी, जो एक और दासी ले आये?
दासी नहीं, बेटी लाया हूँ।
चन्दनबाला के दिन सुख से बीतने लगे एक बार सेठ वृषभदास देव दर्शन कर लौटे! सेठ जी ने घर में प्रवेश किया और बोले... ......
बेटी! किसी दास को बुला दे पैर धुला दें!
पिता श्री मैं ही धुला देती हूँ।

चन्दनबाला सेठ के पैर धुलाती है। उस समय उसके
सुन्दर केश सेठ वृषभदास की गोद में आ गिरे

सेठ ने चन्दना के बालों को समेट कर उसके कंधे पर फेंक दिये।
बड़े सुन्दर बाल हैं, मेरी बेटी के
अच्छा! ये बाल हैं!
उधर एक दासी समीप ही यह सब देख रही थी....

दासी ने सेठानी से कहा
चन्दनबाला सेठ जी की पुत्री के समान नहीं है। मैंने देखा वह चन्दना के बालों की प्रशंसा कर रहे थे...
दूर हट कुल्टा ! मैं क्या अपने पति को जानती नहीं हूँ।

...... वह धर्मात्मा और पवित्र हैं।
मैं तुम्हारे भले की कह रही हूँ। आँखों देखी बात झूठी नहीं हो सकती।

सेठानी के हृदय में शंका फैल गई, वह सोचने लगी...
कहीं स्वामी चन्दन बाला से विवाह न कर लें। इसे घर से निकालना चाहिए!

एक दिन सेठ वृषभदास व्यापारिक कार्यवश बाहर गये
मैं व्यापारिक कार्य से बाहर जा रहा हूं। चन्दन बाला का ध्यान रखना

सेठ जी के चले जाने के बाद, सेठानी ने दासियों को बुलाया और चन्दन बाला के बाल कटा दिये
माँ ! यह क्या कर रही हो ?
माँ ! आज तुम्हें क्या हो गया है ?
झूठी कहीं की ! मैं तेरी माँ नहीं हूं ! मेरे पति को रूप के जाल में फंसा कर मेरा घर बरबाद करना चाहती है !

चन्दनबाला के घुंघराले काले बाल कट चुके हैं... वह दुखी स्वर में कहती है.....
माँ! तुम मुझे समझती क्या हो? पिता श्री के धार्मिक विचारों के कारण रुक गई। मैं महाराज चेटक की पुत्री और महारानी चेलना की बहिन हूँ।
झूठी बातें न बना। राजकुमारी होती तो रुप की हाट में क्यों बिकती?
चन्दन बाला को तलघर में ले जा कर बंद कर दिया, मिट्टी के पात्र में खाना व पानी रख दिया उसके पास...
मेरे दुर्भाग्य का अन्त नहीं। बिना देव दर्शन अन्न जल भी नहीं ले सकती।

सेठ वृषभदास यात्रा से लौटे। सेठानी बहुत गंभीर थी। दास-दासियां भय भीत। अजीब वातावरण था... ...
क्या हो गया इस घर को? कैसी खामोशी छायी है। बेटी चन्दनबाला कहां है?
बेटी, बेटी। मुझसे ही झूठ बोलते हो। पता नहीं कहां चली गई।

सेठ जी ने एक पुरानी दासी को बुला कर पूछा
चन्दन बाला कहां है? सही सही बता। नहीं तो सब नौकरों को जेल भिजवा दूंगा... ...

जेल नहीं जाना है और नौकरी में रहना हो तो सही बता चन्दनबाला कहां है ?
भयभीत दासी ने तलघर की ओर संकेत किया... ...
मेरी पत्नी बड़ी ईर्षालु है ।
चन्दनबाला के हाथ पैर शृंखला से बंधे हैं। सेठ उसे देखकर आश्चर्य करते हैं, दुखी होते हैं और कहते हैं... ...
बेटी चिन्ता न कर। मैं लुहार को बुलाकर जंजीरें कटवाता हूं ।

मुझे जल्दी से जल्दी लौटना चाहिये।
राजपथ की ओर तलघर के खुलने वाले द्वार को खोल कर बाहर निकल गये। बड़ी फुर्ती से...

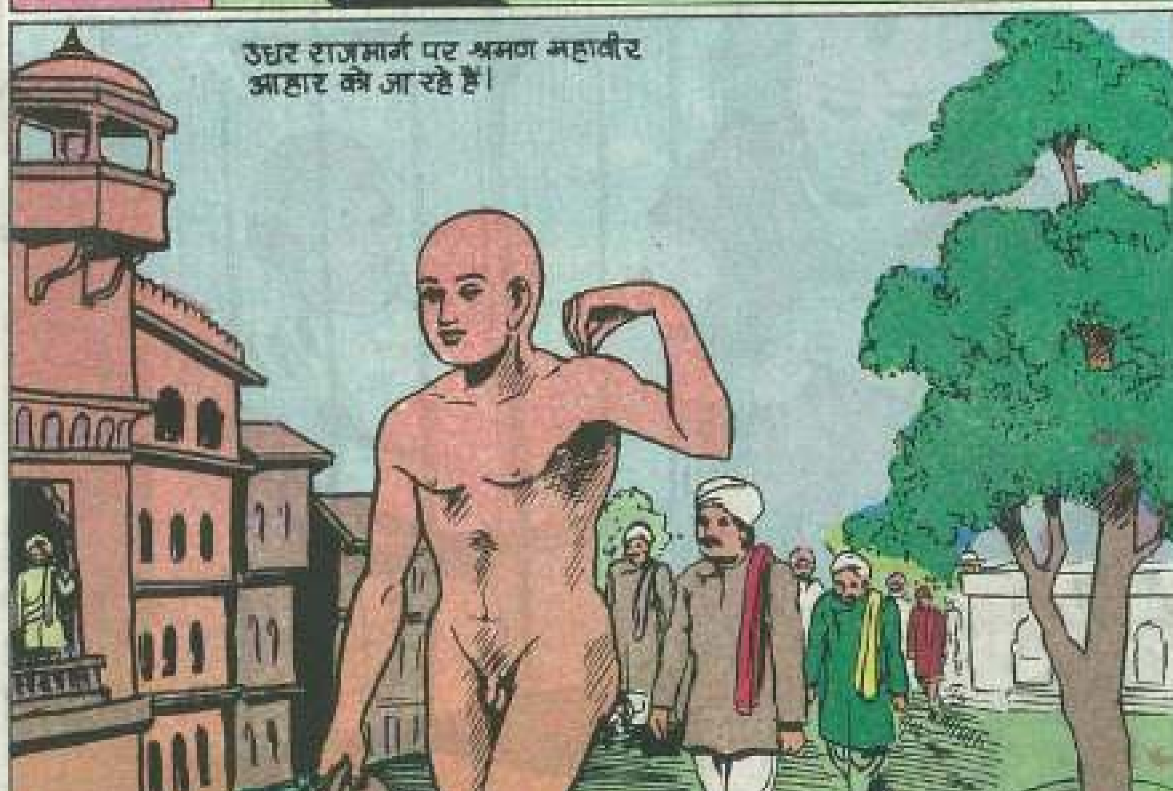
उधर राजमार्ग पर श्रमण महावीर आहार को जा रहे हैं।

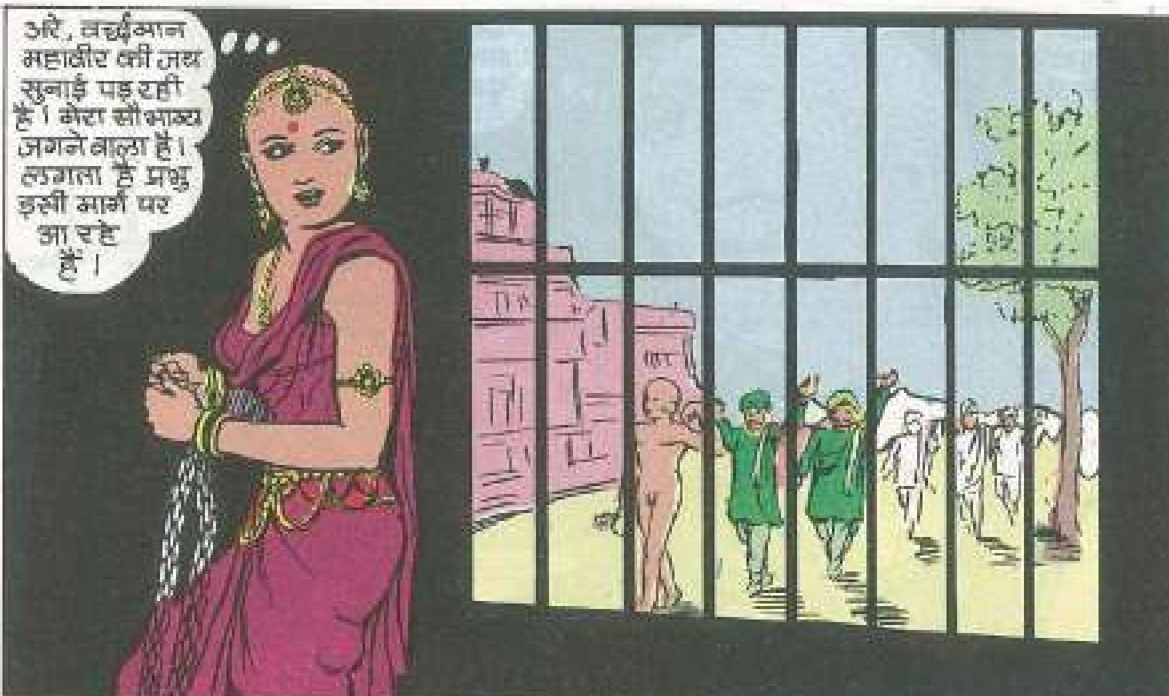
अरे, वर्द्धमान महावीर की जय सुनाई पड़ रही है। मेरा सौभाग्य जगने वाला है। लगता है प्रभु इसी मार्ग पर आ रहे हैं।

मैं भाग्यवान हूँ, आज प्रभु के दर्शन किये। अरे, प्रभु आहार को निकले हैं। यदि मैं आहार दे पाती तो जन्म-जन्म के पाप कट जाते

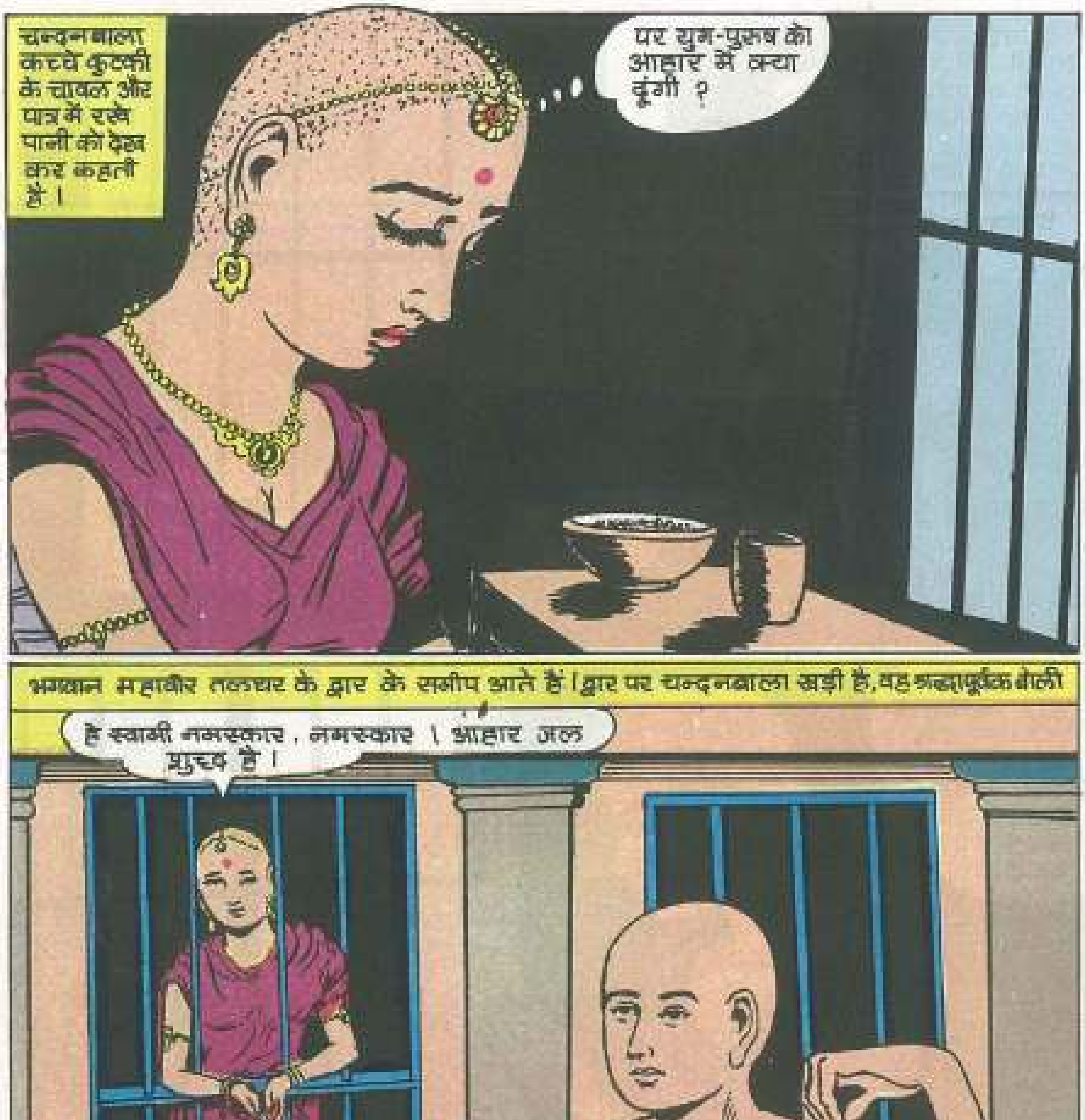
चन्दनबाला कच्चे कुल्थी के चावल और पात्र में रखे पानी को देख कर कहती है।
पर युग-पुरुष को आहार में क्या दूंगी ?
भगवान महावीर तलघर के द्वार के समीप आते हैं। द्वार पर चन्दनबाला खड़ी है, वह श्रद्धापूर्वक बोली
हे स्वामी नमस्कार, नमस्कार। आहार जल प्रासुक है।

श्रमण महावीर के कदम रुके। उन्होंने एक दृष्टि चन्दन बाला पर डाली और सीढ़ियां चढ़ने लगे, तलघर के द्वार तक आये। चन्दन बाला के अधर पर सुख की मुस्कान बिखर गई ।
मुस्कान देखकर प्रभु लौटे। चन्दन बाला की दुख भरी सिसकी निकली..
मेरा दुर्भाग्य प्रभु द्वार से लौट रहे हैं ।

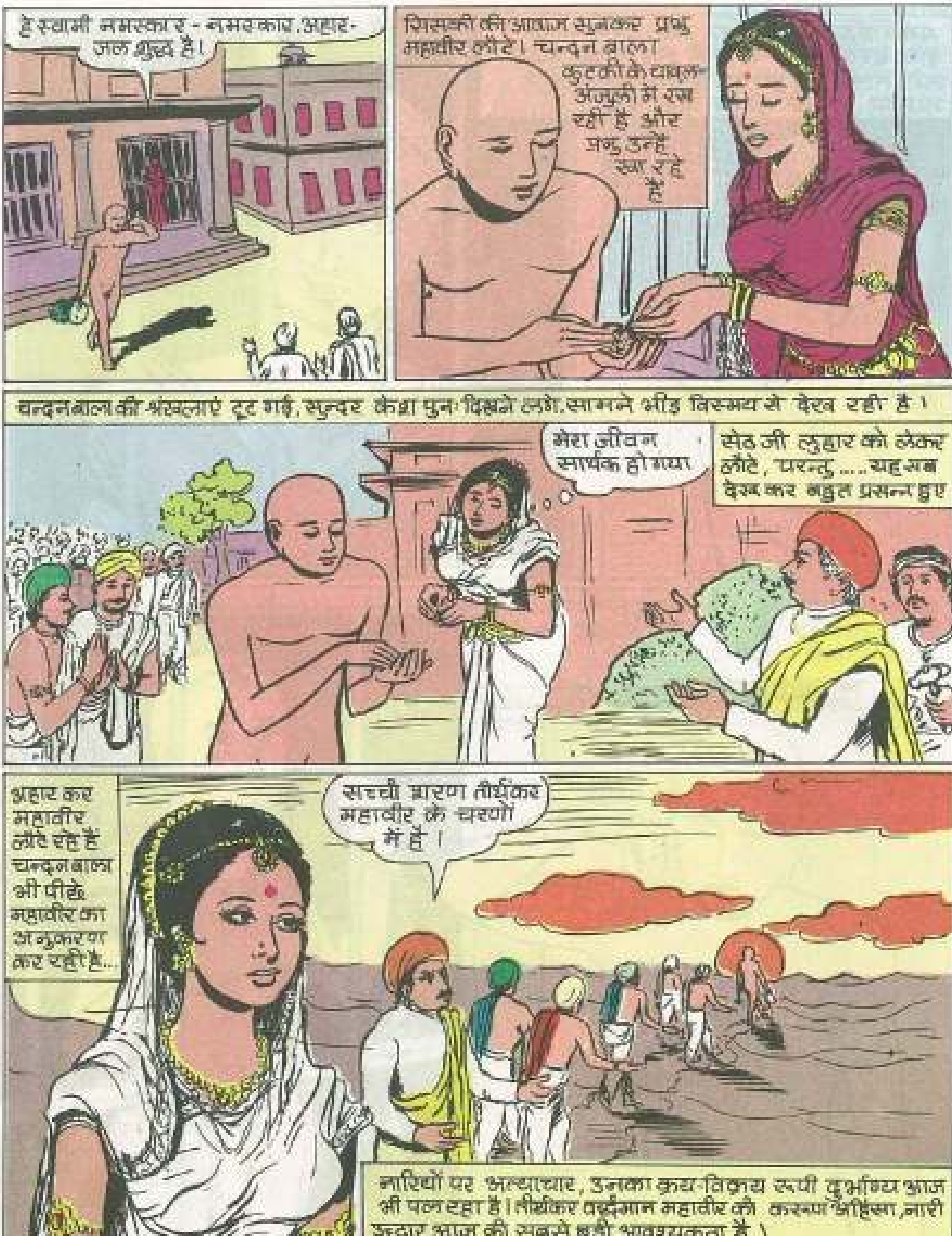

हे स्वामी नमस्कार - नमस्कार, अहार-जल शुद्ध है।
सिसकी की आवाज सुनकर प्रभु महावीर लौटे। चन्दन बाला कुल्थी के चावल अंजुली में रख रही है और प्रभु उन्हें ग्रहण कर रहे हैं
चन्दनबाला की शृंखलाएं टूट गईं, सुन्दर केश पुनः दिखने लगे, सामने भीड़ विस्मय से देख रही है।
मेरा जीवन सार्थक हो गया
सेठ जी लुहार को लेकर लौटे, परन्तु ..... यह सब देख कर बहुत प्रसन्न हुए
अहार कर महावीर लौट रहे हैं चन्दन बाला भी पीछे महावीर का अनुकरण कर रही है...
सच्ची शरण तीर्थंकर महावीर के चरणों में है।
नारियों पर अत्याचार, उनका क्रय-विक्रय रूपी दुर्भाग्य आज भी चल रहा है। तीर्थंकर वर्द्धमान महावीर की करुणा अहिंसा, नारी उद्धार आज की सबसे बड़ी आवश्यकता है।

सौ० प्रेमलता पहाड़िया धर्मपत्नि श्री शिखर चन्द पहाड़िया
जयहिन्द इस्टेट नं. २-ए, दूसरा मंजिल, भूलेश्वर, बम्बई -२

PAHARIA

- PAHARIA SILK MILLS PVT. LTD
- SHIKHARCHAND AMITKUMAR
- PAHARIA INDUSTRIES
- PAHARIA TEXTILES CORPORATION
- PARAS SILK INDUSTRIES
- SAPNA SILK MILLS
- SHIKHARCHAND PREMLATA PAHARIA
- PAHARIA TEXTILES MILLS PVT. LTD
- PAHARIA TEXTILES INDUSTRIES
- PAHARIA UDYOG
- PAHARIA SYNTHETICS
- VARUN ENTERPRISES
- ANAND FABRICS
- PANCHULAL NIRMALDEVI PAHARIA

Kaushal Silk Mills Pvt. Ltd.

FACTORY :
875, KAROLI ROAD, OPP. PAHARIA COMPOUND, BHIWANDI, DIST. THANE.
TEL : 34243 ,22819, 22816
FAX : (02522) 31987

REGD. OFF
JAI HIND ESTATE NO. 2-A, 2ND FLOOR, DR. A.M. ROAD BHULESHWAR,
BOMBAY- 400 002
TEL : 2089251, 2053085 2050996, FAX : 2080231

जैनाचार्यों द्वारा लिखित सत्य कथाओं पर आधारित

जैन चित्र कथा

आठ वर्ष से ८० वर्ष तक के बालकों के लिए

ज्ञान वर्धक, धर्म, संस्कृति एवं इतिहास की जानकारी देने वाली स्वस्थ, सुन्दर, सुरुचिवर्धक, मनोरंजन से परिपूर्ण आगम कथाओं पर आधारित जैन साहित्य प्रकाशन में एक नये युग का प्रारम्भ करने वाली एक मात्र पत्रिका

जैन चित्र कथा

ज्ञान का विकाश करने वाली ज्ञानवर्धक, शिक्षाप्रद और चरित्र निर्माणकारी सरल एवं लोकप्रिय सचित्र कथा जो बालक वृद्ध आदि सभी के लिए उपयोगी अनमोल रत्नों का खजाना, जैन चित्र कथा को आप स्वयं पढे तथा दूसरों को भी पढ़ावे।

विशेष जानकारी के लिए सम्पर्क करें।

आचार्य धर्मश्रुत ग्रन्थ माला

संचालक एवं सम्पादक—धर्मचंद शास्त्री

श्री दिगम्बर जैन मंदिर, गुलाब वाटिका लोनी रोड, जि० गाजियाबाद

फोन 05762-66074